राष्ट्रीय समाजवाद के मूल सिद्धांत

जैक एल्टिस की ओरिजिनल राइटिंग
पूर्व व्हाइट ऑस्ट्रेलिया/नेशनल सोशलिस्ट नेटवर्क NSW स्टेट
नेता



नेशनल सोशलिज़्म और हमारे लोगों की तरक्की के लिए

विषयसूची

एक पेज या उससे कम में नेशनल सोशलिज़्म को समझाना

नेशनल सोशलिज़्म एक बुनियादी सच का पॉलिटिकल रूप है: खून ही किस्मत है। एक सच्चा देश कोई आइडिया, बाज़ार या कुछ लोगों का ग्रुप नहीं होता। यह एक जीता-जागता नस्लीय समुदाय है, एक ऐसा समुदाय जो एक ही वंश, इतिहास, संस्कृति और एक जैसे भविष्य से जुड़ा है। यह खून ही हमारी पहचान, क्रिएटिविटी और ताकत का सोर्स है।

नेशनल सोशलिज़्म में "नेशनल" का मतलब है कि हम नस्लीय संप्रभुता की पुष्टि करते हैं। हमारे देश सिर्फ़ हमारे लोगों के हैं। हम सिविक नेशनलिज़्म और मल्टीकल्चरलिज़्म को नकारते हैं, जो बड़े पैमाने पर इमिग्रेशन के ज़रिए देश के खून के रिश्तों को खत्म कर देता है और झूठा दावा करता है कि बाहरी लोग कभी भी हमारे जैसे बन सकते हैं। देश के प्रति वफ़ादारी अपने खून के प्रति वफ़ादारी से शुरू होती है।

"समाजवाद" का मतलब है कि संस्कृति, अर्थव्यवस्था, कानून और दैनिक जीवन में हर निर्णय,
इसे पूरी जाति के सामूहिक हितों और तरक्की के लिए काम करना चाहिए। यह मार्क्सवादी समाजवाद से बिल्कुल अलग है, जो वर्ग युद्ध को बढ़ावा देता है और झूठी बराबरी चाहता है। यह कैपिटलिज़्म को भी नकारता है, जो लोगों की भलाई से ऊपर मुनाफ़े और पैसे की पूजा को रखता है।

इसके बजाय नेशनल सोशलिज़्म नस्लीय समुदाय के अंदर पूरी क्लास एकता की मांग करता है।
मज़दूर और मालिक, अमीर और गरीब, खून के रिश्ते से जुड़े होते हैं और कभी दुश्मन नहीं होते।
इकॉनमी, राज्य और सभी संस्थाएं लोगों की सेवा के लिए हैं। प्राइवेट प्रॉपर्टी और फ्री एंटरप्राइज का सम्मान तब तक किया जाता है जब तक उनसे लोगों को फायदा होता है।

सरकार हमारे बॉर्डर को सुरक्षित करती है, परिवारों को मज़बूत करती है, आर्थिक आत्मनिर्भरता (ऑटार्की) को बढ़ावा देती है, और ऐसी किसी भी ताकत को खत्म करती है जो हमारे लोगों को बांटना या कमज़ोर करना चाहती है। लीडरशिप हमारी जाति के सबसे अच्छे लोगों से आती है, जो अपने चरित्र, इच्छा और समर्पण में सबसे मज़बूत होते हैं, और वे देश की सफलता या असफलता के लिए पूरी ज़िम्मेदारी लेते हैं।

पूरा सिस्टम नेचुरल लॉ पर आधारित है: ताकत बनी रहती है, हायरार्की नेचुरल है, और काबिल लोग पूरी व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए आगे आते हैं।

नेशनल सोशलिज़्म भी हमारे लोगों के हमेशा आगे बढ़ने की मांग करता है , हर पीढ़ी को पिछली पीढ़ी से ज़्यादा मज़बूत, समझदार और काबिल होना चाहिए। परिवार वह पवित्र नींव है जहाँ यह भविष्य पैदा होता है और पलता है।

नेशनल सोशलिज़्म नस्ल को सबसे ऊपर रखता है, और अनुशासन, एकता और लोगों की सेवा की मांग करता है ताकि हमारे लोग टिक सकें, तरक्की कर सकें और ज़िंदगी के ऊँचे लेवल तक पहुँच सकें।

नेशनल सोशलिज़्म के अंदर नेशनलिज़्म को समझाना

नेशनल सोशलिज़्म में नेशनलिज़्म का मतलब है कि देश एक नस्लीय समुदाय है।
हम एक ही खून, वंश, इतिहास और भविष्य की किस्मत से जुड़े लोग हैं।

यह शब्द "नेशन" की उत्पत्ति के अनुसार है, जो लैटिन शब्द 'नैटियो' से निकला है, जिसका मतलब है जाति, कबीला या लोग।

एक सच्चा देश सिर्फ़ एक विचार नहीं है जिससे कोई भी जुड़ सकता है। यह एक नस्ल के लोगों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है जो पीढ़ियों से एक ही ज़मीन पर रहते, काम करते और उसकी रक्षा करते आए हैं।

NS इस बात पर ज़ोर देता है कि हमारे लोग एक नस्लीय समूह हैं, और हमें अपनी ज़मीन पर नस्लीय संप्रभुता मिलनी चाहिए, जिसे हमारे अपने सबसे अच्छे लोग ही चलाएँ और लीड करें।

यह खून हमारी पहचान, संस्कृति, ताकत और जीने के अधिकार की नींव है। हम जो कुछ भी हैं, वह हमारे खून से ही निकला है। देश के प्रति वफादारी हमारे खून के प्रति वफादारी से ही शुरू होती है।

हम लिबरल "सिविक नेशनलिज़्म" को खारिज करते हैं जो मास इमिग्रेशन और मल्टीकल्चरलिज़्म के ज़रिए खून के रिश्तों को खत्म कर देता है और हमें यह यकीन दिलाने की कोशिश करता है कि कोई विदेशी कभी हमारी तरह का हो सकता है।

बिना खून वाला देश रेत पर बना घर है, समय के साथ यह खराब होता जाता है और टूट जाता है। NS मांग करता है कि हम सबसे पहले अपने खून की रक्षा करें और उसे आगे बढ़ाएं। जब खून जुड़ा होता है और एक होता है, तो देश टिका रहता है और तरक्की करता है।

जैसा कि एडोल्फ हिटलर ने कहा था: “आपके पास सबसे कीमती चीज़ आपके अपने लोग हैं।”

हमारी जाति ही हमारी हर चीज़ की जीती-जागती बुनियाद है, और हम जो कुछ भी बनेंगे, उसकी सबसे ऊपर रक्षा की जानी चाहिए।

नेशनल सोशलिज़्म के अंदर “सोशलिज़्म” को समझाना – यह मार्क्सिस्ट सोशलिज़्म से कैसे अलग है।

नेशनल सोशलिज़्म में सोशलिज़्म का मतलब है कि हर फ़ैसला या काम पूरी जाति (और इसलिए देश) के सामूहिक हित में होता है।

हम एक नस्लीय ग्रुप के लोग हैं और हमें ऐसे फ़ैसले लेने चाहिए जिनसे हमारी पूरी नस्ल को फ़ायदा हो और वह आगे बढ़े। यह सोच सरकार से निकलकर सांस्कृतिक, कानूनी और राजनीतिक रूप से नीचे तक जाती है।

हर इंसान की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ऐसे समाज के लिए अच्छे फैसले और काम करे जिनसे हमारी जाति का भला हो।

बिज़नेस और इंडस्ट्री को अपने काम में नस्ल के हित में काम करना चाहिए, यानी हमारे लोगों को ज़हर नहीं देना चाहिए, कोई भी गलत इंडस्ट्री हमारी नस्ल को नुकसान नहीं पहुंचाएगी।

सरकार को हमेशा पॉलिसी को बाइनरी नज़रिए से देखना और लागू करना चाहिए: क्या कोई चीज़ किसी जाति के लिए अच्छी है, या बुरी? क्या यह हमें एक साथ आगे बढ़ाती है, या हमें पीछे धकेलती है?

हिटलर के सोशलिज़्म का लोगों से प्राइवेट प्रॉपर्टी ज़ब्त करने के मार्क्सिस्ट सोशलिस्ट तरीकों से कोई लेना-देना नहीं है, न ही इंडस्ट्री और ज़मीन मालिकों के खिलाफ़ मज़दूरों के विद्रोह से, और न ही उस काल्पनिक बराबरी वाले समाज से जहाँ "सब बराबर हैं"।

नेशनल सोशलिज़्म व्यक्ति का सम्मान करता है, यह जानते हुए कि नस्लीय प्रतिभा और क्रिएटिविटी एक व्यक्ति के रूप में उभरती है - हमारे खून के सामूहिक पूल से निकलती है।

फ्री मार्केट का सम्मान किया जाता है और उसे आगे बढ़ने दिया जाता है, जब तक कि इंडस्ट्रीज़ रेस (और इसलिए देश) के लिए पॉजिटिव हों।

सब कुछ हमारे लोगों को आगे बढ़ाने के लिए होना चाहिए।

प्राकृतिक कानून

नेचुरल लॉ, प्रकृति का हमेशा रहने वाला, कभी न बदलने वाला कानून है, ये वो नियम हैं जो झूठ, गलत सोच, सोच या गलत सोच से आज़ाद होने पर सारी ज़िंदगी को कंट्रोल करते हैं।

नेचुरल लॉ कहता है कि ताकत कमज़ोरी पर जीतती है, काबिल नाकाबिल से ऊपर उठता है, और हायरार्की हर जीवित सिस्टम में होती है।

हायरार्की सभी जीवों का नेचुरल ऑर्डर है। जो मज़बूत है वह लीड करता है, जो फिट है वह सर्वाइव करता है, टैलेंटेड लोग क्रिएशन करते हैं, और रेस इस नेचुरल सिलेक्शन के ज़रिए आगे बढ़ती है।

प्रकृति में हर जीव हमेशा अपने ज़िंदा रहने और बच्चे पैदा करने के लिए लड़ता रहता है। प्रकृति बराबरी को इनाम नहीं देती, बल्कि काबिलियत, कोशिश और ढलने को इनाम देती है। जो नस्ल इन नियमों को नहीं मानती, वह कमज़ोर हो जाती है और मर जाती है।

नेशनल सोशलिज़्म नेचुरल लॉ को सभी सच्ची व्यवस्था की नींव मानता है।

हम इन सिद्धांतों को नहीं बनाते। हम इन्हें समझते हैं और इनका पालन करते हैं।

हमारे लोग भी बाकी सभी जीवित चीज़ों की तरह ही कुदरती नियमों के हिसाब से चलते हैं: ताकतवर कमज़ोरों को रास्ता दिखाते हैं, काबिल बच्चे पैदा करते हैं, और काबिल लोग आगे बढ़ते हैं। यह बेरहमी नहीं है; यह तो जीने का तरीका है। जब हम कुदरती नियमों के हिसाब से चलते हैं, तो हमारी नस्ल मज़बूत और सेहतमंद होती है।

हम लिबरलिज़्म को खारिज करते हैं, जो बनावटी बराबरी को थोपता है, जहाँ कोई बराबरी नहीं है और कमज़ोरी को सहारा देने के लिए ताकत को सज़ा देता है।

हम अभी खुद को एक ऐसे सिस्टम में पाते हैं जो नेचर को पूरी तरह से उलट देता है। लिबरलिज़्म के आखिरी स्टेज में यह दावा करने की कोशिश की जाती है कि एक आदमी औरत हो सकता है। हम अपने नेताओं में देखते हैं कि हमें कमज़ोर और डरपोक लोग "लीड" करते हैं।

यह सिस्टम टिकाऊ नहीं है और प्रकृति के खिलाफ है। आप प्रकृति के खिलाफ बगावत नहीं कर सकते, क्योंकि प्रकृति आखिरकार बगावत को सुधार देती है।

वर्ग एकता बनाम वर्ग विभाजन

एक और तरीके से नेशनल सोशलिज़्म मार्क्सवाद से अलग है, वह है क्लास यूनिटी बनाम क्लास डिवीज़न का आधार।

नेशनल सोशलिज़्म पूरे समाज में पूरी क्लास एकता की मांग करता है। क्लास में कुछ भी गलत नहीं है। अमीर लोग, मिडिल क्लास, अमीर लोग, वगैरह हमेशा रहेंगे। समाज में क्लास को टाला नहीं जा सकता और वे कुदरती व्यवस्था का नतीजा हैं।

जो लोग सबसे ज़्यादा मेहनत करते हैं और जिनमें नैचुरल काबिलियत, समझ और काबिलियत होती है, जो हमारी जाति में सबसे अच्छे हैं, उन्हें एक हेल्दी मेरिट-बेस्ड समाज में टॉप पर पहुंचना चाहिए।

सभी वर्गों में एकता लाना, एक ही खून से बंधे रहना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि हम सब एक ही जाति के लोग हैं और एक-दूसरे से लड़ना देश के लिए नुकसानदायक है।

हम सभी को एक ही लक्ष्य के लिए लगातार काम करने के लिए एकजुट रहना चाहिए, और वह है एक नस्लीय समूह के तौर पर हमारे लोगों की तरक्की।

मार्क्सवाद जानबूझकर "क्लास वॉर" को भड़काने की कोशिश करता है, जो बांटने वाला है और पूरी तरह से नस्ल को एक-दूसरे के खिलाफ कर देता है और देश की एकता और मेलजोल को खत्म कर देता है।

बंटा हुआ घर टिक नहीं सकता। नेशनल सोशलिज़्म के तहत, नस्लीय एकता को तोड़ने की कोई भी कोशिश, जैसे कि मार्क्सवादी वर्ग का बंटवारा, सही मायने में देश की बर्बादी मानी जाती है।

नेशनल सोशलिज़्म कैपिटलिज़्म को क्यों खारिज करता है

कैपिटलिज़्म सबसे ऊपर पैसे की पूजा है। यह नस्ल, हमारी सेहत और हमारे भविष्य की कीमत पर होता है।

नेशनल सोशलिज़्म के तहत, जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, इकॉनमी लोगों की सेवा के लिए होती है, न कि इसका उल्टा। दौलत, प्रोडक्शन और ट्रेड को नस्लीय कलेक्टिव को आगे बढ़ाना चाहिए। कोई भी इकॉनमिक सिस्टम जो लोगों की भलाई से ज़्यादा प्रॉफ़िट को तरजीह देता है, वह हमारे होने के लिए नुकसानदायक है।

कैपिटलिज़्म इंसानों को कमोडिटी और देशों को मार्केट मानता है, दोनों को ही शोषण के लिए तैयार और उपलब्ध माना जाता है। यह कभी न खत्म होने वाली ग्रोथ, सस्ते लेबर के लिए खुली बॉर्डर की मांग करता है, और इसका नतीजा यह होता है कि सैलरी कम करने और जीवन स्तर को नीचे गिराने के लिए विदेशियों को इम्पोर्ट किया जाता है। यह ज़मीन को सट्टे की संपत्ति में बदल देता है, जिससे हमारे अपने लोग घरों और परिवारों से बेदखल हो जाते हैं। यह बिना जड़ वाले इंटरनेशनल फाइनेंस को इनाम देता है, जबकि ताकत को खत्म करता है।

राष्ट्र.

जब पैसा सबसे बड़ा लक्ष्य बन जाता है, तो दौड़ बेकार हो जाती है।
कैपिटलिस्ट के लिए, ज़्यादा पैसा कमाने के लिए बाकी सब कुछ सेकेंडरी है।

कैपिटलिज़्म आज़ादी का वादा करता है लेकिन हमें कर्ज़ की गुलामी और डेमोग्राफिक रिप्लेसमेंट की तरफ ले जाता है। यह हमारी नस्ल के भविष्य की कीमत पर कभी न खत्म होने वाले कंजम्पशन का सिस्टम है। नेशनल सोशलिज़्म नस्ल को सबसे ऊपर रखता है।
धन।

जो देश खून की जगह सोने की पूजा करेगा, वह खत्म हो जाएगा।

सूदखोरी

सूदखोरी ब्याज पर पैसा उधार देने का तरीका है, खासकर बहुत ज़्यादा ब्याज पर, ताकि उधार देने वाला, उधार लेने वाले की मेहनत से फ़ायदा कमाए, जबकि वह खुद कोई काम न करे।

नेशनल सोशलिज़्म सूदखोरी को असल में एक परजीवी और ज़हरीली ताकत मानकर खारिज करता है। यह बेकार लोगों को काम करने वालों की मेहनत से अमीर बनने देता है, और पैसे को एक ऐसे हथियार में बदल देता है जो लोगों की सेवा करने के बजाय उनसे पैसा निकालता है।

सूदखोरी में, कर्ज़ एक तरह की गुलामी बन जाता है। कर्ज़ लेने वाले को सिर्फ़ ब्याज चुकाने के लिए लगातार मेहनत करनी पड़ती है, जबकि कर्ज़ देने वाला कोई रिस्क नहीं लेता और उसे कभी न खत्म होने वाला रिटर्न मिलता है। यह कुदरती नियम को उलट देता है: ताकतवर और काम करने वाले लोगों को कमज़ोर लोगों को अमीर बनाने के लिए निकाल दिया जाता है। इससे फाइनेंशियल सट्टेबाज़ों का एक ऐसा ग्रुप बनता है जो ईमानदारी से प्रोडक्शन या सर्विस के बजाय कर्ज़ के ज़रिए देशों को कंट्रोल करते हैं।
दौड़।

सूदखोरी भी अपने आप बढ़ती है। कर्ज़ जितना ज़्यादा होता है, ब्याज भी उतना ही बढ़ता है और बढ़ता जाता है, और आखिर में यह देश के लिए मौत की सज़ा बन जाता है, क्योंकि कर्ज़ लगातार बढ़ता रहता है।

सूद लिबरल-कैपिटलिस्ट सिस्टम की जान है। सेंट्रल बैंक बिना कुछ किए पैसे छापते हैं, महंगाई के ज़रिए करेंसी की कीमत कम करते हैं, और युवाओं और आने वाली पीढ़ियों पर ऐसा कर्ज़ लादते हैं जिसे चुकाया नहीं जा सकता, जबकि वही फाइनेंशियल क्लास हर ट्रांज़ैक्शन से फ़ायदा उठाता है। यह लोगों के ख़िलाफ़ आर्थिक जंग है।

इसके उलट, नेशनल सोशलिज़्म यह मांग करता है कि पैसा और क्रेडिट नस्ल और देश की सेवा करें। NS के तहत, बैंकिंग राज्य और नस्ल के अधीन है।

लोन पर ब्याज़ पूरी तरह से सीमित है या उसकी जगह ऐसे सिस्टम लाए गए हैं जो पैरासाइटिक एक्सट्रैक्शन के बजाय असली वैल्यू क्रिएशन को इनाम देते हैं। जर्मन NSDAP ने इंटरनेशनल फाइनेंस की ताकत को तोड़कर और क्रेडिट को नेशनल रीबर्थ और ऑटार्की की ओर मोड़कर यह दिखाया।

नेशनल सोशलिज़्म इस पैरासिटिक लेंडिंग सिस्टम के खिलाफ जंग का ऐलान करता है। हम सूदखोरी के ज़हर को खारिज करते हैं और इसकी जगह ऐसी इकॉनमी लाते हैं जो हमारे लोगों की हमेशा तरक्की में मदद करे।

सूदखोरी का दूसरा नाम चोरी है। हम इसे खत्म कर देंगे।

वित्तीय अटकलें

स्पेक्युलेशन स्टॉक, ज़मीन, घर और कमोडिटीज़ जैसी एसेट्स खरीदने का तरीका है, न कि प्रोडक्शन या प्रोडक्टिव इस्तेमाल के लिए, बल्कि सिर्फ़ बाद में बिना कमाए प्रॉफ़िट के लिए ज़्यादा कीमत पर दोबारा बेचने के लिए।

इस प्रोसेस से देश की तरक्की या डेवलपमेंट में कोई मदद नहीं मिलती, और कोई प्रोडक्ट या सर्विस नहीं बनती या दी जाती।

नेशनल सोशलिज्म सट्टेबाजी को एक ज़हरीली, पैरासाइटिक ताकत मानकर खारिज करता है जो अच्छी अर्थव्यवस्थाओं को खत्म करती है और नस्ल को नुकसान पहुंचाती है।

फैक्ट्री बनाने, खाना उगाने या परिवारों को घर देने के बजाय, कैपिटल जल्दी फाइनेंशियल फायदे के पीछे भागता है। सट्टेबाज बहुत कम रिस्क लेता है, और कोई असली काम नहीं करता, बल्कि हाइप, डर या मार्केट मैनिपुलेशन से होने वाले प्राइस स्विंग से बहुत सारा पैसा निकालता है।

अटकलें प्राकृतिक नियम को भी उलट देती हैं: यह चालाक पैरासाइट को उन लोगों के मुकाबले इनाम देती है जो
बनाएं।

आज ऑस्ट्रेलिया में घरों की सट्टेबाजी और भी ज़्यादा नुकसानदायक है। इन्वेस्टर घरों को ऐसे एसेट्स की तरह इस्तेमाल करते हैं जिन्हें वे प्रॉफिट के लिए बेच देते हैं, जिससे कीमतें युवा व्हाइट परिवारों की पहुंच से कहीं ज़्यादा हो जाती हैं। इससे शादी में देरी होती है, बर्थ रेट कम होता है, और हमारे लोग ज़िंदगी भर भारी कर्ज़ या किराए पर रहने के लिए मजबूर हो जाते हैं, जिससे डेमोग्राफिक सुसाइड होता है।

ज़मीन और घर को इंसानों की मदद करनी चाहिए, परिवारों के लिए पक्के घर के तौर पर, न कि सट्टेबाजी से पैसा निकालने के लिए।

जर्मन NSDAP ने ज़मीन की सट्टेबाजी और बिना कमाई की कमाई के दूसरे तरीकों को खत्म करने की मांग की। NSDAP ने स्टॉक एक्सचेंज को सख्ती से रेगुलेट किया, सट्टेबाजी की ट्रेडिंग को सीमित किया, और कैपिटल को प्रोडक्टिव आत्मनिर्भरता और फिर से हथियारबंद होने की तरफ लगाया। वे समझते थे कि सट्टेबाजी देश को अस्थिर करती है और लोगों की कीमत पर बिना जड़ वाले फाइनेंस को बढ़ाती है।

नेशनल सोशलिज़्म की मांग है कि सभी आर्थिक गतिविधियां नस्लीय समुदाय की सेवा करें।
एसेट्स का इस्तेमाल प्रोडक्टिव तरीके से किया जाना चाहिए, जैसे परिवारों के रहने के लिए घर, इंडस्ट्री बनाने के लिए, या खाना और एनर्जी पाने के लिए, न कि पैसे के फायदे के लिए जुआ खेलने के लिए।

हम बिना कमाए पैसे के इस सिस्टम को नहीं मानते। घर और ज़मीन जीने और समाज बनाने के लिए हैं, मुनाफ़े के लिए बेचने के लिए नहीं। इन्वेस्टमेंट को देश की सेवा करनी चाहिए, प्रोडक्टिव इंडस्ट्री में इन्वेस्ट करके।

नेशनल सोशलिज़्म के तहत, हम सट्टेबाजी पर रोक लगाएंगे और कैपिटल को अपने लोगों की हमेशा की तरक्की के लिए लगाएंगे।

ट्रेड यूनियन प्रश्न

ट्रेड यूनियन मज़दूरों के संगठन हैं जो हड़ताल, मंदी और इंडस्ट्रियल एक्शन के ज़रिए मज़दूरी, शर्तों और झगड़ों पर मालिकों के साथ मिलकर मोलभाव करते हैं।

नेशनल सोशलिज़्म ट्रेड यूनियनों को वैसे ही खारिज करता है जैसे वे लिबरल और मार्क्सिस्ट नज़रिए से मौजूद हैं। वे असल में कम्युनिस्ट संस्थाएं हैं जिन्हें क्लास वॉर को इंस्टीट्यूशनल बनाकर समाज को अस्थिर करने के लिए बनाया गया है।

ट्रेड यूनियन देश को दुश्मनी वाले ग्रुप में बांटती हैं। मज़दूरों को मालिकों के खिलाफ खड़ा किया जाता है। यूनियन नाराज़गी, तोड़-फोड़ और गड़बड़ी को बढ़ावा देती हैं, जो नस्लीय समुदाय के बजाय इंटरनेशनल बागियों की मदद करती हैं।

उनकी हड़तालें प्रोडक्शन को कमज़ोर करती हैं, नस्ल को नुकसान पहुँचाती हैं, और देश को कमज़ोर करके आखिर में कम्युनिस्ट कब्ज़ा करने के मार्क्सवादी लक्ष्यों को आगे बढ़ाती हैं।

नेशनल सोशलिज़्म इस बात पर ज़ोर देता है कि मज़दूरों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए, लेकिन सरकार के एक ग्रुप द्वारा। मज़दूर और मालिक सभी एक ही खून के होते हैं, और कभी दुश्मन नहीं होते।

जर्मन लेबर फ्रंट (DAF) ने बांटने वाली ट्रेड यूनियनों की जगह एक सरकार के कंट्रोल वाली बॉडी बनाई, जिसने क्लास के झगड़े खत्म किए, सभी काम करने वाले जर्मनों को एक किया, और कोशिशों को एक जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों की ओर मोड़ा।

DAF ने वेलफेयर, एजुकेशन (एम्प्लॉयर और एम्प्लॉई दोनों के लिए), 'Strength Through Joy' फुरसत (छुट्टियां) दी, और वर्कर्स के लिए सही हालात पक्के किए।
इस पर सरकार ने नज़र रखी और इसे लागू किया, बिना किसी नुकसान पहुंचाने वाले हमले, तोड़-फोड़ और फूट डाले।

किसी भी शिकायत को राज्य ने निपटाया। राज्य पूरी जाति की भलाई को ध्यान में रखता है, इसलिए उसे झगड़ों में बीच-बचाव करने और प्रोडक्टिविटी, फेयरनेस और वर्कर्स की हेल्थ के बीच बैलेंस बनाने के लिए सही फैसला लेने का काम सौंपा जा सकता है।

माइन काम्फ से: "नेशनल सोशलिस्ट ट्रेड यूनियन क्लास वॉर के लिए कोई संगठन नहीं है, बल्कि उन सभी प्रोडक्टिव ताकतों की सुरक्षा के लिए एक संगठन है जो एक ही खून से जुड़ी हैं... नेशनल सोशलिस्ट ट्रेड यूनियन का काम अपने सदस्यों को नेशनल कम्युनिटी के बारे में एजुकेट करना और उन्हें देश के वजूद के लिए आने वाले संघर्ष के लिए तैयार करना होगा।"

नेशनल सोशलिज़्म प्रोडक्शन में पूरी तरह से नस्लीय एकता की मांग करता है। हम क्लास में बंटवारे या तोड़फोड़ के किसी भी तरीके को मना करते हैं। मज़दूरों को नस्लीय समुदाय के हिस्से के तौर पर सुरक्षित और इज्ज़त दी जाती है और उन्हें कभी भी अपने ही लोगों के खिलाफ हथियार के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

जाति के लिए सेवा के रूप में नेतृत्व

नेशनल सोशलिज़्म के तहत, लीडर रेस का सबसे अच्छा होता है। वह रेस की सेवा और ड्यूटी के लिए लीड करता है। यह उसकी ज़िम्मेदारी है कि वह हमारे लोगों को तरक्की की ओर ले जाए और हमारी रेस का बने रहना पक्का करे।

लीडर एक टैलेंटेड इंसान होता है जो हमारे खून के पूल से निकलता है, कैरेक्टर, विल, इंटेलेक्चुअल और लॉयल्टी में सबसे मज़बूत होता है। वह समय के साथ स्ट्रगल, काबिलियत और रेस के प्रति डेडिकेशन से खुद को बिना किसी शक के साबित करता है। वह लोगों की विल का एक रूप है।

नेशनल सोशलिस्ट डेमोक्रेसी में मौजूद कमज़ोरियों और खामियों को नकारते हैं: आम लोगों का राज और ऐसी कमेटियाँ जहाँ ज़िम्मेदारी और जवाबदेही को कमज़ोर और धुंधला कर दिया जाता है, और यह संसदीय सिस्टम बातें करने वालों और समझौता करने वालों से भरा होता है।

NS लीडर सफलताओं और असफलताओं के लिए पूरी ज़िम्मेदारी लेता है। हिटलर ने कहा था: “अधिकार नीचे की ओर बहता है, ज़िम्मेदारी ऊपर की ओर।” लीडर हर नतीजे के लिए लोगों को पूरी तरह से जवाबदेह होता है।

हमारी जाति को एक मज़बूत लीडर की ज़रूरत है जो हमारे लोगों को आगे बढ़ाए, नहीं तो हम गिर जाएंगे और कमज़ोरी और गिरावट में चले जाएंगे।

राज्य जाति की सेवा करता है

हमने बताया है कि कैसे नेता जाति का सेवक होता है, और जाति को हमेशा तरक्की और खुशहाली की ओर ले जाता है। इसी सिद्धांत से, राज्य (सरकार) भी जाति का सेवक है।

नेशनल सोशलिज़्म के तहत, सरकार लोगों की मालिक नहीं है। यह सिर्फ़ एक मकसद के लिए है: उस ज़िंदा नस्लीय समुदाय की रक्षा करना, उसे बचाना और आगे बढ़ाना जिस पर यह राज करता है और जिसे लीड करता है।

राज्य लोगों की इच्छा का ऑर्गनाइज़्ड ज़रिया है। लीडरशिप प्रिंसिपल से गाइड होकर, अधिकार नीचे की ओर बहता है, जबकि ज़िम्मेदारी ऊपर की ओर बहती है। राज्य हमारे लोगों को आगे बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार है।
हर फ़ैसले, हर कानून, हर काम को उसी NS बाइनरी से देखा जाता है: क्या यह हमारे खून का काम करता है, हमारे लोगों को मज़बूत करता है, और हमारे हमेशा के भविष्य को सुरक्षित करता है, या यह नस्ल को नुकसान पहुँचाता है?

सरकार हमारे बॉर्डर को हमले से बचाती है। यह उन पॉलिसी के ज़रिए हमारे खून की सुरक्षा करती है जो हेल्दी परिवारों और कम्युनिटी को बढ़ावा देती हैं। यह इकॉनमी को आत्मनिर्भर बनाती है और विदेशी कैपिटल द्वारा शोषण की संभावना को खत्म करती है। सबसे ज़रूरी बात यह है कि सरकार किसी भी ताकत, चाहे वह विदेशी हो या घरेलू, को कुचल देती है जो हमारी एकता को तोड़ना चाहती है।

नेशनल सोशलिस्ट लिबरल सरकार को नहीं मानते, जो देश को एक ऐसा मार्केटप्लेस मानती है जिसकी कोई सीमा नहीं है और जो सभी के लिए खुला है, जिससे बाहरी लोग आ सकते हैं और बिना जड़ वाली पूंजी हमारी ताकत और रिसोर्स को खत्म कर सकती है। नेशनल सोशलिज़्म के तहत, सरकार हमारे लोगों की रक्षा करने वाली और उन्हें आगे बढ़ाने वाली दोनों है।

हिटलर ने माइन काम्फ में कहा :

"राज्य एक लक्ष्य को पाने का ज़रिया है। इसका लक्ष्य शारीरिक और मानसिक रूप से एक जैसे जीवों के समुदाय को बचाना और आगे बढ़ाना है। यह बचाव ही आखिरी लक्ष्य है।"

राज्य जाति की सेवा करता है और उसकी तरक्की और सुरक्षा करता है।
और कुछ नहीं, वरना इसे होने का कोई हक नहीं है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता: राष्ट्र के लिए आत्मनिर्भरता

इकोनॉमिक ऑटार्की, देश की आत्मनिर्भरता और आर्थिक आज़ादी की सोची-समझी पॉलिसी है। इसका मतलब है कि नस्लीय समुदाय अपने ज़िंदा रहने और तरक्की के लिए ज़रूरी खाना, एनर्जी, कच्चा माल और बनी-बनाई चीज़ें बनाता है, साथ ही विदेशी व्यापार और इंटरनेशनल फाइनेंस/ग्लोबलिज़्म पर निर्भरता को कम करता है या आदर्श रूप से खत्म कर देता है।

नेशनल सोशलिज़्म, नस्लीय संप्रभुता के एक बुनियादी हिस्से के तौर पर आत्मनिर्भरता की पुष्टि करता है। इकॉनमी सिर्फ़ लोगों की सेवा के लिए है, न कि बिना जड़ वाले कैपिटलिस्ट को अमीर बनाने या हमें विदेशी ताकतों के सामने कमज़ोर बनाने के लिए।

आत्मनिर्भरता यह पक्का करती है कि हमारे लोगों को भूखा न रखा जाए, उन पर रोक न लगाई जाए, या उन्हें ब्लैकमेल करके झुकाया न जाए। यह नस्ल को इंटरनेशनल सूदखोरी और सट्टेबाजी की जंजीरों से बचाता है, जो हमारे देश को नुकसान पहुंचाती हैं। प्रोडक्शन को अपने लोगों के अधीन करके, हम देश की मज़बूती बनाते हैं, कुदरती नियमों के साथ तालमेल बिठाते हैं (मज़बूत नस्लें खुद को पूरी तरह से बनाए रखती हैं), और भविष्य के किसी भी संघर्ष के लिए तैयार रहते हैं।

लिबरल कैपिटलिज़्म इसका उल्टा है; यह एक-दूसरे पर निर्भरता और ग्लोबलिज़्म को मानता है। खुली सीमाओं से हमें सस्ते लेबर की बाढ़ आ जाती है, विदेशी कर्ज़ पीढ़ियों को गुलाम बना देता है, और इम्पोर्ट हमें दुश्मन सप्लायर के रहम पर छोड़ देता है। नतीजा यह होता है कि देश एक इकोनॉमिक ज़ोन में सिमट जाता है, जो कमज़ोर और शोषण का शिकार हो सकता है।

आत्मनिर्भरता हमेशा "सबसे आसान" ऑप्शन नहीं होती, लेकिन यह ज़रूरी है, इसके लिए डिसिप्लिन, इनोवेशन और कभी-कभी त्याग की ज़रूरत होती है। सच्ची आज़ादी का यही एकमात्र रास्ता है। जो जाति अपने प्रोडक्शन को कंट्रोल करती है, वह अपनी किस्मत को भी कंट्रोल करती है।

जैसा कि एडॉल्फ हिटलर ने कहा था: "सिर्फ़ एक ही फ़ायदा है और वह है देश का फ़ायदा, और सिर्फ़ एक ही नज़रिया है, जो यह है कि जर्मनी को राजनीतिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता की स्थिति में लाया जाना चाहिए... संक्षेप में, मैं यह ज़रूरी समझता हूँ कि उन सभी क्षेत्रों में 100 प्रतिशत आत्मनिर्भरता हासिल की जानी चाहिए जहाँ यह मुमकिन हो।"

नेशनल सोशलिज़्म किसी भी बाहरी पर निर्भरता को खारिज करता है और आत्मनिर्भरता की मांग करता है ताकि हमारे लोग इंटरनेशनल सिस्टम की पकड़ से आज़ाद होकर हमेशा आगे बढ़ सकें।

परिवार राष्ट्र का निर्माण खंड है

परिवार देश की नींव है। यह हमारे लोगों की सबसे छोटी, सबसे स्वाभाविक इकाई है। यह वह पालना है जहाँ नस्ल पैदा होती है, पलती-बढ़ती है और आगे बढ़ती है।

हमारी जाति का हर जीनियस, हर लीडर, हर क्रिएटर, आर्टिस्ट, हर मज़बूत आदमी या औरत जो हमारे लोगों को आगे बढ़ाता है, परिवार से ही निकलता है।
न्यूक्लियर फ़ैमिली वह जगह है जहाँ खून का रिश्ता बनता है, वैल्यूज़ सिखाई जाती हैं, और जहाँ कलेक्टिव के प्रति वफ़ादारी सबसे पहले सीखी जाती है।

एक मज़बूत परिवार से मज़बूत बच्चे पैदा होते हैं। मज़बूत बच्चे बड़े होकर एक मज़बूत देश बनाते हैं। एक कमज़ोर या टूटा हुआ परिवार पूरे नस्लीय समुदाय को कमज़ोर कर देता है।

नेशनल सोशलिज़्म परिवार को हर चीज़ की नींव मानता है। यह माँ बनने को सबसे बड़ा बुलावा मानता है, यानी सेहतमंद गोरे बच्चों को जन्म देना और उनकी परवरिश करना। यह परिवार को बिगड़ने से, बच्चों के होने में देरी करने वाले या उन्हें रोकने वाले आर्थिक दबावों से, और उन सोचों से बचाता है जो मर्द और औरत के नैचुरल रोल को कमज़ोर करती हैं।

मार्क्सवाद और लिबरलिज़्म परिवार को कमज़ोर और खत्म करना चाहते हैं, ताकि हम सब मिलकर जो नस्लीय बंधन बनाते हैं, उन्हें तोड़ सकें और हमारे लोगों का शोषण होने दे सकें।

देश का सेवक होने के नाते, यह सरकार का कर्तव्य है कि वह परिवारों को ऐसी पॉलिसी दे, जिनसे हमारे लोगों के लिए शादी, बच्चे और घर का मालिकाना हक मुमकिन हो सके।

एडोल्फ हिटलर ने कहा था: "परिवार राष्ट्र का केंद्र है"

जो देश अपने परिवारों को नज़रअंदाज़ करता है, वह अंदर से खत्म हो जाता है। हर परिवार में हमारी जाति का भविष्य छिपा है।

अनन्त स्वर्गारोहण: आने वाला मनुष्य

नेशनल सोशलिज़्म सिर्फ़ हमारी जाति के बचने के बारे में नहीं है, बल्कि हमारे लोगों को ऊँचे स्तर पर पहुँचाने और आगे बढ़ाने की हमेशा कोशिश है।

गोरे यूरोपियन लोगों में लगातार कुछ नया करने, बेहतर करने और डेवलप करने की एक नैचुरल इच्छा होती है। हमारे लोगों ने पहले भी लगभग नामुमकिन और अविश्वसनीय चीज़ें हासिल की हैं। गोरे लोगों की काबिलियत ने दुनिया को अनगिनत नए आविष्कार और खोज दी हैं। नेशनल सोशलिज़्म इसे सही ठहराता है।

हमारे लोगों के जेनेटिक गुणों को पॉलिटिकल सिद्धांत में बदलना।

इस धरती पर हम जो कुछ भी करते हैं और योगदान देते हैं, वह हमारे बाद आने वाले लोगों के लिए है - आने वाले इंसान के लिए। समाज और हमारे खून दोनों को ऊपर की दिशा में आगे बढ़ाने की यह सोच नेशनल सोशलिज़्म और हेल्दी समाजों के लिए ज़रूरी है।

हमारी हर पीढ़ी को अपनी पिछली पीढ़ी की कामयाबियों को आगे बढ़ाना चाहिए और अपने लोगों और देश को आगे बढ़ाना चाहिए। ठहराव या गिरावट मंज़ूर नहीं है।

लिबरलिज़्म के तहत, हमने बेबी बूमर्स के बाद हर पीढ़ी को नीचे गिरते देखा है, कम शिक्षा, कम काबिलियत और कम काबिलियत, और बहुत ज़्यादा आर्थिक मुश्किलों और परेशानियों के बीच। यह आने वाले इंसान के लिए समाज बनाने के बिल्कुल उल्टा है, बल्कि बाकी सभी की कीमत पर एक पीढ़ी को अमीर बनाना है।

नेशनल सोशलिज़्म हमेशा ऊपर उठने की मांग करता है। आने वाला आदमी हमसे ज़्यादा मज़बूत, ज़्यादा काबिल, ज़्यादा क्रिएटिव और ज़्यादा समझदार होना चाहिए। उसे बनाना हमारी ज़िम्मेदारी है।

आगे का रास्ता: ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रीय समाजवाद और दुनिया भर में

नेशनल सोशलिस्ट्स को जितना हो सके अच्छे से और सबसे डिसिप्लिन्ड तरीके से मिलकर काम करने और ऑर्गनाइज़ करने की कोशिश करनी चाहिए।

आइडियोलॉजिकल बुनियाद और एजुकेशनल फेज़ एक बात है, लेकिन उसे नैचुरली प्रैक्टिकल और रियल-वर्ल्ड ऑर्गनाइज़िंग में आगे बढ़ना चाहिए। नेशनल सोशलिस्ट्स को ऐसे लीडर्स के आस-पास सेंटर होना चाहिए जो हमारी रेस के बेस्ट लोगों को रिप्रेजेंट करते हैं, हायरार्किकल और मेरिटोक्रेटिक तरीके से। उन्हें अपने देशों में ऑर्गनाइज़ करने के जो भी तरीके अवेलेबल हों, उनका इस्तेमाल करना चाहिए।

जैसे-जैसे हमारा आंदोलन बढ़ता है और सिस्टम अपनी पाबंदियां और सख्त करता है, नेशनल सोशलिस्ट्स को ज़्यादा से ज़्यादा कुशलता के लिए, अपने ऑर्गनाइज़ेशन में एडजस्ट करने लायक, वर्सेटाइल, टैक्टिकल और समझदारी वाला होना चाहिए, और सिस्टम को एक्टिविस्ट्स को जेल में डालने का मौका नहीं देना चाहिए।

कई मॉडल मौजूद हैं। माहिर नेशनल सोशलिस्ट ऑर्गनाइज़र को उन सभी का फ़ायदा उठाना चाहिए। एक्टिविज़्म, सड़क पर प्रदर्शन, और “ट्राइब एंड ट्रेन” एक्टिव क्लब को आइडियली एक साथ लाना चाहिए।

संरचना।

ज़्यादा पाबंदी वाले देशों में, अगर ऑर्गनाइज़ करने का कोई और तरीका मौजूद नहीं है, तो वे NS पार्लियामेंटेरियनिज़्म अपना सकते हैं।

ऐसे किसी भी व्यक्ति से बचें जो हिंसा को बढ़ावा देता है या उसका सुझाव देता है। ऐसे लोगों को तुरंत अपने आस-पास से हटा दें।

सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात खास मॉडल नहीं है, भले ही कुछ मॉडल दूसरों से ज़्यादा असरदार हों।

सबसे ज़रूरी बात यह है कि नेशनल सोशलिस्ट ऑर्गनाइज़िंग और सेंट्रलाइज़िंग असल में हो रही है। हमारी दुनिया को देखने का नज़रिया हमारी पॉलिटिकल आइडियोलॉजी को बनाने के लिए ऑर्गनाइज़ करने वाले लोगों की एक टीम की मांग करता है।

हमारा समय अभी है। भविष्य उनका है जो मेहनत करते हैं — जो पक्के इरादे वाले, हिम्मत वाले रहते हैं, और हमारे आंदोलन के प्रति पक्की इच्छा और लगन बनाए रखते हैं।